International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 10 Issue: 03 | March - 2026 SJIF Rating: 8.659 ISSN: 2582-3930

पाठ्यचर्या में पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्वो का समावेशन

***1 सुशील कुमार सिंह**

*1 सहायक आचार्य, टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, भागलपुर

द्वारा सम्बद्ध, टी.एम.बी. यूनिवर्सिटी, भागलपुर (बिहार)

सारांश (Abstract)

शिक्षा का संबंध केवल पाठ्यपुस्तक और कक्षागत शिक्षण तक सीमित नहीं है इसका जुड़ाव प्रकृति के प्रति गहरी समझ विकसित करने और पृथ्वी पर हमारे कार्यों के परिणामों को समझाने के अर्थ में भी है। बालक को बचपन से ही, पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे व्यावहारिक ज्ञान के रूप में परिवर्ती करने का प्रतिमान स्थापित करती है। जिससे विद्यार्थियों का बौद्धिक विकास के साथ-साथ मानसिक और शारीरिक विकास भी समान रूप से हो ताकि वे संवेदनशील और जिम्मेदार समाज का निर्माण कर सके। यह शोध पत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि कैसे वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति **पर्यावरण संरक्षण** और **सामाजिक उत्तरदायित्व** को शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में स्थापित करती है। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 किस प्रकार पाठ्यचर्या, मूल्य-आधारित शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, बहुविषयक दृष्टिकोण तथा सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना और सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करने पर बल देती है। यह शिक्षा नीति सतत् विकास के लक्ष्यों (SDGs) के एकीकरण पर बल देती है जो विद्यार्थियों को वर्तमान समय के अनुसार उनके अपने परिवेश तथा वातावरण के प्रति सजग व जागरूक बनाती है ताकि भविष्य की चुनौतियों से निपटा जा सकें। अंततः यह शोधपत्र NEP 2020 की अवधारणों के आधार पर विद्यार्थियों को एक सफल और जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में अग्रसर है, जो अपनी जड़ों और पर्यावरण के प्रति सचेत हैं।

मुख्य शब्द (Keywords): पाठ्यचर्या, NEP 2020, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक उत्तरदायित्व, सतत विकास, SDGs Goals, मूल्य-आधारित शिक्षा।

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के इतिहास में शिक्षा सदैव से ही केवल ज्ञान के हस्तांतरण का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सबसे सशक्त उपकरण रही है। 21वीं सदी में, मानव सभ्यता के सामने दो सबसे बड़े संकट विद्यमान हैं जिसमें से पहला है, **पारिस्थितिक असंतुलन** (Ecological Imbalance) जिसके कारण अस्तित्व का खतरा उत्पन्न हो गया है, तथा दूसरी और सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या है, **सामाजिक अलगाव व नैतिक मूल्यों का ह्रास**। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इन दोनों संकटों के समाधान हेतु शिक्षा को एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में पुनः निर्मित करती है।

भारतीय दर्शन हमेशा ***'तेन त्यक्तेन भुंजीथा'*** *अर्थात्* त्याग के साथ उपभोग के सिद्धांत पर आधारित रहा है। हालांकि, आधुनिकता की अंधी लहर में हमने प्रकृति को केवल एक संसाधन के रूप में देखा। जिसके परिमाण स्वरूप आज इतनी विपरीत स्थिति आन पड़ी है। जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) की हालिया रिपोर्टें स्पष्ट चेतावनी देती हैं कि यदि वैश्विक तापमान वृद्धि को नियंत्रित नहीं किया गया, तो परिणाम भयावह हो सकते है। इस पृष्ठभूमि में, शिक्षा की भूमिका अब केवल 'पर्यावरण दिवस' मनाने तक सीमित नहीं रह सकती। इसीलिए NEP 2020 इस औपनिवेशिक और उपभोगवादी सोच को बदलकर पारिस्थितिक चेतना को पाठ्यक्रम के केंद्र में शामिल करती है। *"नीति के अनुच्छेद 11.8 में स्पष्ट रूप से 'पर्यावरण शिक्षा' को समग्र विकास का हिस्सा माना गया है, जिसमें जल संरक्षण, प्रदूषण, जैव विविधता और सतत उपभोग जैसे विषयों को व्यावहारिक रूप से सीखने पर बल दिया गया है।"* (NEP 2020, Holistic Multidisciplinary Education) यह प्रकृति के साथ सामंजस्य की उस प्राचीन भारतीय अवधारणा को पुनर्जीवित करने का प्रयास है, जो आधुनिक विज्ञान के साथ मिलकर भविष्य को सुरक्षित कर सके। इसके साथ ही यह नीति यह भी स्वीकार करती है कि पर्यावरण संरक्षण कोई बाहरी विषय नहीं, बल्कि मानवीय अस्तित्व के लिए अनिवार्य कदम है। यह नीति केवल साक्षरता का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि यह सतत विकास के लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने की एक रणनीतिक योजना भी है।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्र को एक सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करना है। वर्तमान समय में तकनीकी प्रगति के बीच मानवीय मूल्यों और सामाजिक संवेदनशीलता में कमी देखी गई है। शिक्षा का बाजारीकरण होने से छात्रों में व्यक्तिगत सफलता की होड़ तो बढ़ी, किंतु आपसी प्रतिस्पर्धा ने सामाजिक उत्तरदायित्व को कहीं पीछे छोड़ दिया। इसी असंतुलन को दूर करने के लिए आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को अधिक व्यावहारिक बनाने पर जोड़ दिया गया है। NEP 2020 महज़ सैद्धांतिक उपदेशों तक सीमित नहीं है। यह 'केवल किताबी ज्ञान' या 'रटने की प्रवृत्ति' को समाप्त कर **अनुभवात्मक अधिगम** को बढ़ावा देती है। यह विद्यार्थियों को सामुदायिक सेवा, संवैधानिक मूल्यों और नैतिक शिक्षा के माध्यम से समाज के वंचित वर्गों के प्रति संवेदनशील बनाने की मार्गदर्शिका है।

पारिभाषिक शब्दावली

यह आवश्यक है की सर्वप्रथम '**पर्यावरण संरक्षण**' और '**सामाजिक उत्तरदायित्व**' को स्पष्ट कर लिया जाए। पर्यावरण संरक्षण से तात्पर्य प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करने, उसके क्षरण को रोकने और पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने के लिए व्यक्तियों, संगठनों और सरकारों द्वारा किए जाने वाले नियोजित प्रयासों से है तथा सामाजिक उत्तरदायित्व एक नैतिक ढांचा है इसका अर्थ है हमारे निर्णय और कार्य केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज के हित में होने चाहिए।

- **पर्यावरण संरक्षण :** *"पर्यावरण संरक्षण वह व्यवहारिक और वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत प्राकृतिक संसाधनों (वायु, जल, मृदा, और जीव-विविधता) का इस प्रकार प्रबंधन और सुरक्षा की जाती है कि उनका अस्तित्व बना रहे और भावी पीढ़ियों के लिए उनकी गुणवत्ता प्रभावित न हो।"*

  मुख्य तत्व : संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, प्रदूषण नियंत्रण, पारिस्थितिक तंत्र की पुनर्स्थापना और जैव-विविधता का संरक्षण।

- **सामाजिक उत्तरदायित्व :** *''सामाजिक उत्तरदायित्व एक संगठन या व्यक्ति की वह जवाबदेही है जिसमें कोई भी व्यक्ति या संस्था अपनी गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और नैतिक उत्थान में योगदान देती है।''*

मुख्य तत्व : नैतिकता, नागरिक कर्तव्य, सामुदायिक सेवा, परोपकार और न्यायसंगत व्यवहार।

वर्तमान शिक्षा के अंतर्गत सामाजिक एवं पर्यावरणीय आयाम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जहाँ शिक्षा को समाज और प्रकृति से अलग एक कृत्रिम इकाई मानने के बजाय उसे पूरक के रूप में देखा गया है। पर्यावरणीय आयाम की दृष्टि से वर्तमान शिक्षा पद्धति पारिस्थितिक साक्षरता पर बल देती है, जिसका अर्थ केवल प्रदूषण के कारणों को जानना नहीं बल्कि प्रकृति के साथ मानवीय संबंधों का पुनः मूल्यांकन करना है। इसी प्रकार, शिक्षा का सामाजिक आयाम व्यक्ति को एक संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिक बनाने की प्रक्रिया है। वर्तमान शैक्षिक ढांचे में सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ है विविधता का सम्मान, समावेशिता और संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूकता। शिक्षा केवल व्यक्तिगत करियर निर्माण का साधन नहीं है बल्कि यह एक ऐसा मंच है जहाँ विद्यार्थी सामाजिक असमानता, लिंग भेद और हाशिए पर खड़े समुदायों की चुनौतियों को समझता और महसूस करता है।

तार्किक रूप से देखा जाए तो पर्यावरणीय सुरक्षा और सामाजिक न्याय एक-दूसरे से अविभाज्य हैं क्योंकि पर्यावरणीय आपदाओं का सर्वाधिक प्रभाव समाज के सबसे कमजोर वर्गों पर ही पड़ता है। अतः वर्तमान शिक्षा इन दोनों आयामों के बीच एक सेतु का निर्माण करती है, जिससे विद्यार्थी यह समझ सके कि एक स्वस्थ पर्यावरण के बिना एक समृद्ध समाज की संकल्पना अधूरी है। शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण और समाज के प्रति जिम्मेदारी विकसित करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में तीन प्रमुख स्तंभों को शामिल किया गया है :

1. **संवेदनशीलता (Sensitivity) :** प्रकृति और मानवीय संबंधों के प्रति सूक्ष्म दृष्टि विकसित करना।
2. **सहभागिता (Participation) :** केवल कक्षा में बैठकर नहीं, बल्कि वास्तविक समस्या के साथ 'करके सीखना' (Learning By Doing) के माध्यम से समाधान खोजना।
3. **सतत जीवनशैली (Sustainable Lifestyle) :** शिक्षा को जीवन के व्यवहार में उतारना, जिससे आने वाली पीढ़ियां न्यूनतम संसाधनों में अधिकतम कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकें।

यह केवल शैक्षणिक रूपरेखा नहीं, बल्कि एक भविष्योन्मुखी सामाजिक और पर्यावरणीय घोषणापत्र है। जो शिक्षा के माध्यम से **संवेदनशीलता, सहभागिता** और **सतत जीवनशैली** के तीन स्तंभ प्रस्तावित किए गए हैं, वे सामूहिक रूप से छात्र के व्यक्तित्व का कायाकल्प करने की क्षमता रखते हैं। जहाँ संवेदनशीलता छात्र को प्रकृति और समाज के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि प्रदान करती है, वहीं सहभागिता उसे समस्याओं के व्यावहारिक समाधान खोजने के लिए 'करके सीखने' (Learning by Doing) के

धरातल पर उतारती है। अंततः, इन दोनों का संगम एक सतत जीवनशैली के रूप में परिणत होता है, जो न्यूनतम संसाधनों में अधिकतम कल्याण के भारतीय दर्शन को वैश्विक संदर्भ में पुनः स्थापित करता है।

पाठ्यचर्या में पर्यावरण शिक्षा का समावेशन एवं उत्तरदायित्व बोध

दशे भर के स्कूलों में पर्यावरण शिक्षा को शामिल करने के महत्त्व पर प्रारम्भिक शिक्षा नीतियों ने ही प्रकाश डाला था। परतूँ यह प्रयास कक्षगत और पाठ्यपुस्तकिय समझ तक ही अधिक सीमित रहा। **एनसीएफ 1988** में पर्यावरण की सुरक्षा और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को स्कूली पाठ्यचर्या में शामिल किया। 'स्कूल की पाठ्यचर्या में पर्यावरण सुरक्षा और देखभाल, प्रदषण की रोकथाम और ऊर्जा के संरक्षण के उपायों को उजागर करना चाहिए। इसे जीवित रहने, वद्धि और विकास करने के लिए भौतिक पर्यावरण व पेड़-पौधों और जानवरों (मनुष्यों सहित) के जीवन के बीच की परस्पर निर्भरता को भी उजागर करना चाहिए। अक्षय और ग़ैर-पारम्परिक ऊर्जा संसाधनों का महत्त्व भी पाठ्यचर्या का एक महत्त्वपूर्ण घटक होना चाहिए।'

एनसीएफ 2000 में पाठ्यचर्या सम्बन्धी विविध सरोकारों की बात करते हुए यह मत प्रस्तुत किया गया कि सीखने के क्षेत्रों के सावधानीपूर्वक विश्लेषण पर, पर्यावरण शिक्षा के विचारों और अवधारणाओ को एक एकीकृत ज्ञानक्षेत्र के रूप में देखने की आवश्यकता है। अध्ययन की इस योजना के तहत, ईवीएस(EVS) को स्कूली पाठ्यचर्या के विषय के रूप में रखा गया।

आगे **एनसीएफ 2005** में भी पाठ्यचर्या के चार चरणों (प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक) में इसकी विशिष्ट आवश्यकताओ के अनुसार शामिल किया गया। पहले के विपरीत, 'विज्ञान' और 'सामाजिक विज्ञान' को प्राथमिक स्तर पर EVS के रूप में एकीकृत किया गया और EVS को विषयवस्तु-सम्बन्धी दृष्टिकोण के साथ पढ़ाया जाने लगा।

वर्तमान समय में **एनईपी 2020** आवश्यक विषयों, उनके कौशल और क्षमताओं के पाठ्यचर्यागत समाकलन को प्रोत्साहित करती है जिसमें जलवायु परिवर्तन और जैव-विविधता के संकट का समाधान कक्षागत सोच से अधिक वास्तविक और व्यवहारिक धरातल पर करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही आज के विद्यार्थियों में समाज के उत्तरदायित्व और उसके प्रति अपने कर्तव्यों को लें भावनात्मक रूप से जागरूक व सजग बनाने की जिम्मेदारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने अपने कंधे पर ले ली है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पाठ्यचर्या को केवल किताबी बोझ से मुक्त कर उसे व्यावहारिक धरातल पर लाने का प्रयास नहीं करती बल्कि यह नीति अनिवार्य रूप से पर्यावरण संरक्षण को कला, साहित्य और व्यावसायिक शिक्षा के साथ एकीकृत भी करती है। इसमें अनुभवात्मक अधिगम के तहत विद्यार्थियों को रटने के बजाय 'करके सीखने' (Learning by doing) के अवसर प्रदान किए जाते हैं, जैसे स्थानीय जल स्रोतों का सर्वेक्षण, ऊर्जा ऑडिट और जैविक खेती के प्रोजेक्ट्स आदि अब पाठ्यक्रम का हिस्सा है। तथ्य यह है कि जब छात्र स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र जैसे स्थानीय नर्सरी या अपशिष्ट प्रबंधन केंद्रों के साथ सीधे जुड़ते हैं, तो उनकी सीखने की क्षमता में सामान्य से अधिक की वृद्धि होती है।

यह नीति स्थानीय संदर्भों को प्राथमिकता देती है, जिससे एक छात्र अपने क्षेत्र की विशिष्ट पर्यावरणीय समस्याओं और उनके पारंपरिक समाधानों को समझ सके। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान से बाहर निकालकर वास्तविक दुनिया की चुनौतियों, जैसे ई-वेस्ट मैनेजमेंट और सौर ऊर्जा के अनुप्रयोगों से जोड़ता है, जो भविष्य के जिम्मेदार नागरिकों के निर्माण के लिए आवश्यक है। जब विद्यार्थियों को अनुभवात्मक शिक्षण के माध्यम से जल संचयन, अपशिष्ट प्रबंधन और सतत जीवनशैली के व्यावहारिक

पहलुओं से जोड़ा जाता है, तब वह पर्यावरण को एक मात्र विषय के बजाय अपनी जीवन शैली के हिस्से के रूप में स्वीकार करता है। यह चेतना छात्र को उपभोगवादी संस्कृति से हटाकर संरक्षणवादी संस्कृति की ओर ले जाती है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों को सुरक्षित रखने का एकमात्र मार्ग है। सामुदायिक सहभागिता और सेवा-आधारित अधिगम के माध्यम से विद्यार्थियों में सहानुभूति का विकास किया जाता है, जो समाज के विखंडन को रोकने के लिए आवश्यक है।

- **पर्यावरण संरक्षण में पाठ्यचर्या एवं शिक्षा का क्रियात्मक योगदान :** शिक्षा अब पर्यावरण को 'सूचना' से 'आचरण' में बदल रही है। भारत दुनिया के उन गिने-चुने देशों में शामिल है जहाँ माननीय सर्वोच्च न्यायालय (2004 के निर्देश) के बाद पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया गया। व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से छात्रों को सौर ऊर्जा, ई-कचरा प्रबंधन और जैविक खेती का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के अनुसार, 2030 तक पर्यावरण-अनुकूल शिक्षा के माध्यम से दुनिया भर में 24 मिलियन नई नौकरियाँ (Green Jobs) उत्पन्न करने का प्रयास है, जिसके लिए वर्तमान शिक्षा आधार तैयार कर रही है।

- **सतत विकास का लक्ष्य (SDG 13 & 15) :** शिक्षा प्रणाली अब सीधे तौर पर जलवायु कार्रवाई से जुड़ी है। आंकड़ों के अनुसार, पर्यावरणीय साक्षरता में 1% की वृद्धि से कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने की नागरिकों की क्षमता में सुधार करने के प्रयास को देखा गया है। NEP 2020 के तहत 'स्कूल कॉम्प्लेक्स' को 'जीरो वेस्ट जोन' बनाने का लक्ष्य रखा गया है, जो छात्रों को अपशिष्ट प्रबंधन का व्यावहारिक अनुभव देता है। शिक्षा मंत्रालय ने स्कूलों में 'युवा ईको-क्लब' के माध्यम से जीवन मिशन को एकीकृत किया है। इसके तथ्य बताते हैं कि जब छात्र ऊर्जा संरक्षण और जल संचयन जैसे कार्यों को स्कूल में प्रोजेक्ट के रूप में करते हैं, तो उनके परिवारों की ऊर्जा खपत में औसतन 15% तक की कमी दर्ज की जा सकती है।
- **सामाजिक उत्तरदायित्व में शिक्षा का प्रभाव :** उच्च शिक्षा में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नए नियमों के तहत विद्यार्थियों के लिए सामुदायिक सेवा (Community Service) के क्रेडिट अनिवार्य कर दिए गए हैं। इसका सीधा अर्थ है कि छात्र को डिग्री प्राप्त करने के लिए समाज के साथ जुड़कर काम करना ही होगा। यह छात्रों को वृद्धाश्रमों, अस्पतालों और ग्रामीण साक्षरता अभियानों से जोड़कर उनमें सामाजिक पूंजी विकसित कर रहा है। NEP 2020 के तहत लिंग समावेश निधि (Gender Inclusion Fund) और वंचित क्षेत्रों के लिए विशेष शिक्षा जोन का निर्माण किया गया है। शिक्षा का यह सामाजिक दायित्व है कि वह असमानता की खाई को भरे। कई सर्वेक्षण आकड़े दर्शाते है कि शिक्षा के प्रसार से सामाजिक अपराधों और भेदभावपूर्ण प्रवृत्तियों में गिरावट आती है, क्योंकि शिक्षा संवैधानिक नैतिकता को विद्यार्थियों में संस्कारित करती है।
- **पाठ्यचर्या में समाहित सहानुभूति का विज्ञान :** आधुनिक शिक्षण पद्धतियों में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम को शामिल किया गया है। शोध प्रमाणित करते हैं कि SEL कार्यक्रमों में भाग लेने वाले छात्रों में नेतृत्व क्षमता और सामाजिक

सहयोग की भावना अन्य छात्रों की तुलना में 11% अधिक होती है। वर्तमान शिक्षा व्यक्ति को समाज के प्रति जवाबदेह बनाकर सामाजिक न्याय और समरसता सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहा है। यह दायित्व अब केवल नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि 'क्रेडिट-आधारित' अनिवार्य व्यवस्था बन चुका है।

विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना और व्यवहारगत परिवर्तन

शिक्षा की वास्तविक सफलता केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने में नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के दैनिक व्यवहार में आने वाले परिवर्तन में निहित है। आज विद्यार्थी केवल किताबी ज्ञान का संचायक नहीं है, बल्कि वह पर्यावरणीय संकटों के प्रति एक सजग समाधानकर्ता के रूप में उभर रहा है। उनका दृष्टिकोण अब केवल समस्याओं को पहचानने तक सीमित नहीं है, बल्कि वे पारिस्थितिक संतुलन को अपने व्यक्तिगत जीवनशैली का हिस्सा मान कर उसके संरक्षण के लिए तत्पर है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अंतिम लक्ष्य छात्रों को 'उपभोक्ता' से 'संरक्षक' के रूप में परिवर्तित करना है। कई शोध दर्शाता हैं कि पर्यावरणीय शिक्षा से जुड़े सक्रिय कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों के परिवारों में बिजली की खपत और कचरा उत्पादन में 15-20% की कमी देखी गई है, जिसे 'रिवर्स सोशलाइजेशन' कहा जाता है। इस सकारात्मक पहल का सबसे बड़ा प्रभाव यह है कि वे अब 'पर्यावरण' को अपने से अलग कोई विषय नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व का विस्तार मानते हैं। स्कूलों में 'इको-क्लब' और 'किचन गार्डन' जैसी गतिविधियों ने उनके भीतर प्रकृति के साथ एक आत्मीय जुड़ाव पैदा किया है। यह शिक्षा नीति छात्रों में 'पर्यावरणीय नैतिकता' (Environmental Ethics) विकसित करती है, जिससे वे प्लास्टिक के त्याग या जल संचयन जैसे कार्यों को किसी दबाव में नहीं, बल्कि अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानकर करते हैं। केंद्र द्वारा शुरू किए गए 'Lifestyle for Environment' (LiFE) मिशन को शिक्षा के साथ एकीकृत करके, यह नीति एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर रही है जो पर्यावरण, जलवायु न्याय और सतत् जीवनशैली के प्रति सजग है। इन क्षेत्रों में विद्यार्थियों के अंदर कई व्यवहारिक परिवर्तन देखने को मिल रहें है आज विद्यार्थी पर्यावरण को अपने सामाजिक उत्तरदायित्वो के रूप में ग्रहण कर रहे है जिसे उनके द्वारा किये जा रहें छोटी-छोटी प्रयास से समझा जा सकता है, जैसे जन्मदिन पर 'वृक्षारोपण करना' या 'जीरो वेस्ट' उत्सव मनाना इसके अलावा 'पुनर्चक्रण' (Recycling), 'प्लास्टिक-मुक्त' अभियान, पक्षियों और जैव-विविधता के प्रति सजगता व भावनात्मक जुड़ाव जो भीषण गर्मी के दौरान पक्षियों के लिए छतों और बालकनियों पर मिट्टी के पात्रों में पानी और दाना रखना इत्यादि इस बात का प्रमाण है कि व्यवहारगत परिवर्तन की जड़ें गहरी हो रही हैं। अंततः यह व्यवहारगत परिवर्तन ही भारत को वैश्विक मंच पर एक पर्यावरण-सचेत राष्ट्र के रूप में स्थापित करेगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित पृथ्वी सुनिश्चित करेगा।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था शिक्षा को केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान तक सीमित न रखकर उसे अनुभव और व्यवहार में परिवर्तित करने का एक सशक्त माध्यम बन गया है। शिक्षा की वास्तविक सार्थकता अब केवल संज्ञानात्मक विकास या परीक्षा परिणामों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसका मुख्य पैमाना विद्यार्थियों के दैनिक आचरण और नैतिक मूल्यों में आने वाला सकारात्मक व्यवहारगत परिवर्तन है। आधुनिक युग के दो सबसे बड़ी समस्याओं में पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक उत्तरदायित्व का ह्रास के समाधान पर विचार करते हुए यह शोधपत्र वर्तमान पाठ्यचर्या के माध्यम

से विद्यार्थियों में **'संवेदनशीलता'**, **'सहभागिता'** और **'सतत जीवनशैली'** के तीन सशक्त स्तंभों को स्थापित करती है जो सामूहिक रूप से विद्यार्थी के व्यक्तित्व का कायाकल्प करने की क्षमता रखते हैं। संवेदनशीलता जहाँ छात्र को सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि प्रदान करती है, वहीं सहभागिता उसे वास्तविक समस्याओं के समाधान हेतु 'करके सीखने' (Learning by Doing) के धरातल पर उतारती है और सतत जीवनशैली उनके दृढ़ता और संकल्प का प्रतीक है।

अंतः यह स्पष्ट है कि जब पर्यावरणीय चेतना को पाठ्यचर्या के साथ एकीकृत किया जाता है, तो इसके परिणाम विद्यालय की चारदीवारी से बाहर निकलकर समाज और परिवारों तक पहुँचती हैं तब पर्यावरणीय शिक्षा नैतिक जिम्मेदारी के रूप में विद्यार्थियों के ज्ञान और व्यवहार के माध्यम से उनके स्वभाव का हिस्सा बन जाती है, जो केवल एक विषय न रहकर जीवन दर्शन बन जाती है। यह अध्ययन रेखांकित करता है कि मौजूदा पाठ्यचर्या के आधार पर दी जा रही शिक्षा अब विद्यार्थियों को 'उपभोक्ता' से 'संरक्षक' बनाने की दिशा में अग्रसर है। अनुभवात्मक अधिगम और 'रिवर्स सोशलाइजेशन' के माध्यम से छात्र न केवल स्वयं जागरूक हो रहे हैं, बल्कि वे अपने परिवारों और समुदायों के व्यवहार में भी सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं। पाठ्यचर्या में पर्यावरण शिक्षा का एकीकरण, सामुदायिक सेवा के अनिवार्य क्रेडिट और 'Lifestyle for Environment' जैसे कई अभियान इस बात का प्रमाण है कि भारत अब एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर रहा है जो अपने पर्यावरण (जलवायु न्याय आदि) और सामाजिक समरसता (सामाजिक उत्तरदायित्व बोध) के प्रति पूरी तरह जागरूक है। यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों को पूर्ण निष्ठा के साथ जल्द-से-जल्द धरातल पर उतारा जाए तो हम न केवल एक जिम्मेदार समाज का निर्माण करेंगे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, समृद्ध और हरित पृथ्वी में योगदान सुनिश्चित कर सकेंगे।

संदर्भ सूची :

- शिक्षा मंत्रालय। (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार।
- पांडे, एल. (2001) ग्रामीण मध्य हिमालयी स्कूलों में पर्यावरणीय शिक्षा। *जर्नल ऑफ एनवायर्नमेंटल एजुकेशन*, *32*(3), 47-53.
- शर्मा, पी.के., एवं मेनन, एस. (2021). *भारत में अनिवार्य पर्यावरणीय शिक्षा: एक GEEP केस स्टडी*। https://cdn.naaee.org/sites/default/files/casestudy/file/case_study_complusory_ee_-_india_final.pdf
- मुरलीधर, सी. (2023, फरवरी). पर्यावरण शिक्षा एक उभरता हुआ ज्ञानक्षेत्र। *लर्निंग कर्व (अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी)*, 6-10। (जे. जीत, अनु.; बी. त्रिपाठी, पुनरीक्षण)
- एनसीएफ (NCF). (1988). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 1988*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT).
- एनसीएफ (NCF). (2000). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT).

- एनसीएफ (NCF). (2005). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)
- यूनेस्को (UNESCO). (2017). सतत विकास लक्ष्यों के लिए शिक्षा: अधिगम उद्देश्य। https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000247444
- नॉर्थ अमेरिकन एसोसिएशन फॉर एनवायर्नमेंटल एजुकेशन। www.naaee.org
- हॉलवेग, के.एस. (2007). *उत्तराखंड पर्यावरणीय शिक्षा केंद्र क्या करता है?: एक अमेरिकी परिप्रेक्ष्य*। मार्च 2008 को पुनः प्राप्त: www.naaee.org/prog-tiatives/professionl-development-tours/what_does_ueec_do.pdf/view